मानसिक रोगियों की देखभाल

डॉ. नरेश पुरोहित

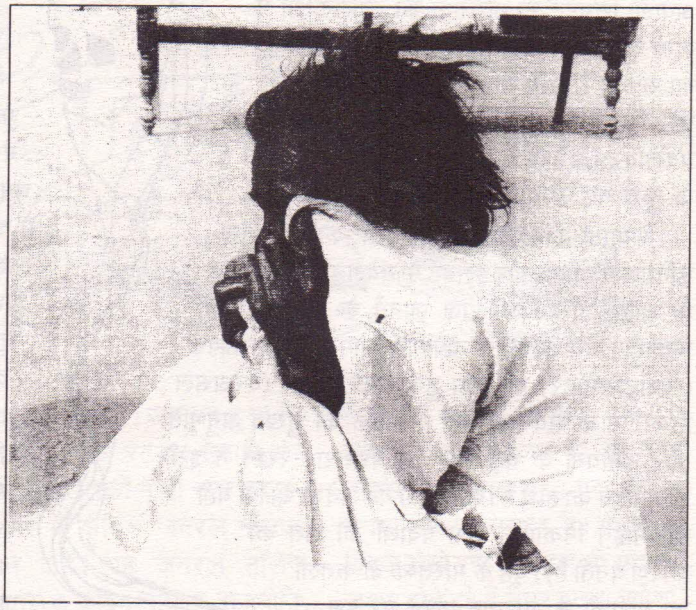

भारत में मानसिक रूप से अस्वस्थ रोगियों की देखभाल आम तौर पर उपेक्षा का शिकार रही है। लेकिन पिछले कुछ सालों से इसमें लगातार सुधार होता नज़र आ रहा है। मानसिक रोगों से उत्पन्न होने वाली समस्याओं और रोगियों को मानसिक स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने में आ रही समस्याओं को लेकर लोगों में जागरूकता बढ़ती जा रही है। मनोरोगियों व उनके परिवार के प्रति आम लोगों के दृष्टिकोण में धीरे-धीरे लेकिन निश्चित सुधार होता नज़र आ रहा है। मनोरोगियों को उपलब्ध कराई जा रही स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता भी सुधर रही है। देश में अब मनोरोगों के कारगर इलाज उपलब्ध हैं। इनमें कुछ नई औषधियां भी शामिल हैं। पिछले दशक में मनोरोगों के लिए उपलब्ध स्वास्थ्य सेवाओं के विकास को अनेक घटनाओं ने प्रभावित किया है।

अठारहवीं सदी के उत्तरार्ध से अंग्रेज़ों ने हमारे देश के अनेक भागों में पागलखाने तथा पागलों के चिकित्सालय बनाने शुरू किए। ये पागलखाने ब्रिटेन की ऐसी ही संस्थाओं के नमूनों पर बनाए गए थे तथा उनकी कार्यप्रणाली भी ब्रितानी संस्थाओं जैसी थी। ब्रिटेन में मनोरोगों के उपचार के सम्बंध में हो रहे परिवर्तनों का भारत में भी आंशिक प्रभाव पड़ा। इसके परिणामस्वरूप बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में इन पागलखानों के नाम में परिवर्तन कर उन्हें मानसिक चिकित्सालय कहा जाने लगा। स्वतंत्र भारत में मनोरोगों के लिए स्वास्थ्य सेवाएं निर्धारित करने हेतु सर जोसेफ भोर की अध्यक्षता में एक उच्चस्तरीय समिति का गठन किया गया। इस समिति की सिफारिशों (जिनमें से अधिकांश को आज तक लागू नहीं किया गया) में एक सिफारिश यह भी थी कि देश में मनोरोगियों के लिए चिकित्सालय खोले जाएं और इनमें कार्यरत चिकित्सकों व गैर चिकित्सकीय लोगों के प्रशिक्षण हेतु सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएं।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद 1954 में बैंगलोर में अखिल भारतीय मनोस्वास्थ्य संस्था की स्थापना मनोरोगों हेतु स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण घटना थी। बीस साल बाद यानी 1974 में इस संस्था का विलय राज्य द्वारा संचालित एक गैर मानसिक चिकित्सालय के साथ कर उसे एक नया नाम मिला 'राष्ट्रीय मनोस्वास्थ्य एवं तांत्रिकी सेवा संस्थान'(NIMHANS)। 1987 से यह संस्थान विश्व स्वास्थ्य संगठन के सहयोग से मनोचिकित्सा सम्बंधी अनुसंधान व प्रशिक्षण का कार्य कर रहा है। मनोचिकित्सकों तथा मानसिक स्वास्थ्य व तंत्रिका विज्ञान से सम्बंधित व्यक्तियों को प्रशिक्षण उपलब्ध कराने में निमहान्स एक बड़े केन्द्र के रूप में उभरा है। सन् 1994 में निमहान्स को (मानसिक स्वास्थ्य व तंत्रिका विज्ञान से सम्बंधित विषयों के लिए) विश्वविद्यालय का दर्जा दिया गया।

1960 के दशक के उत्तरार्द्ध तक मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं का दायरा मनोचिकित्सालयों के इर्द गिर्द ही सीमित